International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-05-2026, Accepted: 15-06-2026, Published: 30-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 388-389

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन

**अंशुमान कुमार[1], श्रीमती उपासना श्रीवास्तव[2]**
[1] प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] शोध निर्देशिका, सहा. प्राध्यापिका, शिक्षा संकाय, प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
**DOI:** https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12231

**सारांश**
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन में रायपुर जिले के शासकीय हिंदी माध्यम विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) का चयन यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया। सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी तथा सृजनात्मकता परीक्षण का उपयोग कर आँकड़े संकलित किए गए। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा सहसंबंध गुणांक (r) द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया।

**मुख्य शब्दः** सृजनात्मकता, सामाजिक–आर्थिक स्तर, माध्यमिक विद्यार्थी, सहसंबंध

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। आधुनिक शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है बल्कि विद्यार्थियों की चिंतन क्षमता, कल्पनाशक्ति, समस्या समाधान क्षमता तथा सृजनात्मकता के विकास पर भी बल देती है। वर्तमान वैश्विक प्रतिस्पर्धा एवं तकनीकी युग में सृजनात्मकता सफलता का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है।

सृजनात्मकता व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह नवीन विचारों, कल्पनाओं तथा मौलिक समाधानों का सृजन करता है। विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक परिवेश विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं। सामाजिक–आर्थिक स्तर परिवार की आय, शिक्षा, व्यवसाय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का संयुक्त सूचक है। इसलिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

## अध्ययन का महत्व

1. विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता के विकास को समझने में सहायक।
2. सामाजिक–आर्थिक स्तर और सृजनात्मकता के मध्य संबंध स्पष्ट करने में उपयोगी।
3. शिक्षकों को सृजनात्मक शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता।
4. शिक्षा योजनाकारों एवं नीति निर्माताओं हेतु उपयोगी।
5. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए मार्गदर्शक।

## समस्या का कथन

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।"

## अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएँ

1. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।
2. छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।
3. छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।

## परिसीमन

- अध्ययन रायपुर जिले तक सीमित।
- केवल शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी।
- हिंदी माध्यम विद्यालय।
- कक्षा 9वीं एवं 10वीं।
- कुल नमूना 100 विद्यार्थी।

## प्रकार्यात्मक परिभाषाएँ

**सृजनात्मकताः** नवीन एवं मौलिक विचारों को उत्पन्न करने की मानसिक क्षमता।

सामाजिक–आर्थिक स्तररू परिवार की आय, व्यवसाय, शिक्षा एवं सामाजिक स्थिति का संयुक्त माप।

## अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर– सामाजिक–आर्थिक स्तर
आश्रित चर – सृजनात्मकता

**शोध विधिः** वर्तमान अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।
**जनसंख्याः** रायपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।
**न्यादर्शः** यादृच्छिक नमूना चयन विधि।

| कमांक | विद्यार्थी | संख्या |
|---|---|---|
| 1 | छात्र | 50 |
| 2 | छात्राएँ | 50 |
| कुल | | 100 |

## उपकरण

1. उपाध्याय–सक्सेना सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी
2. बैकर–मेहंदी सृजनात्मकता परीक्षण

## आँकड़ा संकलन प्रक्रिया

विद्यालयों में विद्यार्थियों को दोनों परीक्षण प्रशासित किए गए तथा प्राप्त अंकों को सारणीकृत किया गया।

## सांख्यिकीय तकनीक

- माध्य
- मानक विचलन
- सहसंबंध गुणांक

## आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।

**सारणी 1:** विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर

| N | सृजनात्मकता डमंद | SES Mean | r |
|---|---|---|---|
| 100 | 539.30 | 186.63 | −0.0034 |

**व्याख्याः** r = −0.0034 प्राप्त हुआ जो नगण्य सहसंबंध को दर्शाता है। अतः सामाजिक–आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गयज्ञं

परिकल्पना 2 छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।

**सारणी 2:** छात्रों की सृजनात्मकता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर

| N | सृजनात्मकता डमंद | SES Mean | r |
|---|---|---|---|
| 50 | 551.50 | 187.16 | 0.1011 |

**व्याख्याः** सहसंबंध गुणांक 0.1011 प्राप्त हुआ जो सार्थक नहीं है।

परिकल्पना 3 छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।

**सारणी 3:** छात्राओं की सृजनात्मकता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर

| N | सृजनात्मकता डमंद | SES Mean | r |
|---|---|---|---|
| 50 | 527.10 | 186.22 | −0.0118 |

**व्याख्याः** सहसंबंध गुणांक −0.0118 प्राप्त हुआ जो सार्थक नहीं है।

## प्रमुख निष्कर्ष

1. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक संबंध नहीं पाया गया।
2. छात्रों की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।
3. छात्राओं की सृजनात्मकता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

## शैक्षिक निहितार्थ

1. विद्यालयों में सृजनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जाए।
2. विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के अवसर दिए जाएँ।
3. प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण अपनाया जाए।
4. नवाचार आधारित शिक्षण विधियाँ विकसित की जाएँ।

## सुझाव

1. बड़े नमूने पर अध्ययन किया जाए।
2. निजी एवं शासकीय विद्यालयों की तुलना की जाए।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पृथक अध्ययन किया जाए।
4. सृजनात्मकता को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों का अध्ययन किया जाए।

## भविष्य के अनुसंधान हेतु सुझाव

1. विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों पर अध्ययन।
2. लिंग, बुद्धिलब्धि एवं सृजनात्मकता के संयुक्त अध्ययन।

विद्यालयी वातावरण एवं सृजनात्मकता संबंधी अध्ययन।

## संदर्भ


1. अग्रवाल, वाई. पी. (2014). सांख्यिकीय विधियाँ। नई दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिशर्स।
2. कौल, एल. (2009). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली। नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।
3. गैरेट, एच. ई. (2008). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी। नई दिल्ली : वकील्स फेफर एंड साइमन्स।
4. गुप्ता, एस. पी. (2010). अनुसंधान पद्धति एवं सांख्यिकीय तकनीकें। इलाहाबाद।
5. चौहान, एस. एस. (2011). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली।
6. मंगल, एस. के. (2012). शैक्षिक मनोविज्ञान। नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग।
7. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (2006). शिक्षा में अनुसंधान। नई दिल्ली : प्रेंटिस हॉल।
8. शर्मा, आर. ए. (2013). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी। मेरठ : लॉयल बुक डिपो।
9. सिंह, ए. के. (2011). व्यवहार विज्ञान में परीक्षण, मापन एवं अनुसंधान विधियाँ। नई दिल्ली : भारती भवन।
10. सक्सेना, एन. आर. (2010). शैक्षिक अनुसंधान। मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन्स।